## स्वास्थितल विद्वार अपाष्टकी भेरव

(राग: मालकंस - ताल: त्रिताल)

सिंहनाद गर्जे हा शंकर। भूकैलासीं नाथ कमलेश्वर।।ध्रु.।। मीच ब्रह्म माया मी विष्णू। शक्तिकाल महाकाल अघोर भी। अधिष्ठान

अपवाद भ्रांति। ज्ञान ध्यान गुण संकल्प स्फुरण तत्पुरुष नामधर।।१।। वामदेव ईशान वरेण्य मी सद्योजात गायत्री प्रणव। चिन्मणि मार्तांड बोध नेति नेति गर्जे मी। चिदानंद जंगम स्थावर।।२।।